यक्षामावसी पूजा

(खयच्चि मावस)

भूमिका :—

यक्षामावसी का पुनीत त्यौहार काश्मी
निजीय और देशीय है, इसका उद्भव कब
कुच्छ कहा नहीं जा सकता है। किन्तु "नीलम
उल्लेख मिलता है जिससे ज्ञान होता है ५वीं,
यह उत्सव प्रचलित था। सृष्टि के आरम्भ में
त्यका (तराई) यानी काश्मीर तथा हिमाचल प्र
किन्नर, नाग, पिशाच आदि जातियां रहती थ
इन आश्रयभूत प्रदेशों की उपलब्धि इन स्था
यछकूठ, यछहोम, गान्दरबल, गाडुर काश्मीर
नागगाम किनहोम है। कुबेर जिसकी अलका

पूजाविधि :—

कुल रीति के अनुसार 'यक्षामावसी जाती है। काश्मीर में इस दिन कुबेर वा होती है। प्राय: एक बहे को जो शिवलिं थाली में स्थापित कर पूजा आरम्भ इस

शुक्लाम्बरधरं० नरासनो गदापाणि: विभु। यक्षाधीश: सखा शम्भो: धनदो ब्रह्मा० गुरवे नम०।

मुंह और पैरों को जल से छिउकें :—

पवित्र धारण करें :—वसो: पवित्रमि

अपने आप को तिलक करें और

पानी का पात्र जल से भरा उठाकर ज
यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुः। ओं तत् स
तावत् तिथौ अघ (तिथि-मास-पक्ष-वार अ
लेकर) पौषेमासस्य कृष्णपक्षस्य अमावस्यां-
तायां महागणपतये। कुबेराय, धनदाय, वै
राजाय, यक्षेश्वराय, नरवाहनाय, महारा
संकल्पात् सिद्धिरस्तु धूपो नमः, दीपं नमः ॥

पानी के पात्र में— तिल-अर्घ्य-फूल ड
पानी भगवान् पर डालें :— संव्वः सृजामि।
स्तौ ते।

हाथ में फूल लेकर पढ़ें—गायत्र्यै नमः
स्वः तत् सवितुः वरेण्यं। साथ ही यह भी प
विद्महे नरवाहनाय धीमहि तन्नो यक्षः प्रच
बार) ॥ ओं तत् सत् ब्रह्म। (मास-पक्ष-ति

हाथ में फूल ले कर पढ़ें—कुबे
ऊं पूजय कुबेरं, धनदं, यक्षेश्वरं, महा
ऊं आवाहय ।

भगवान् कुबेर जी को फूल चढ़ाते

पढ़ें—आवाहयाम्यहं देवं कुबेरं गदया
रूढं उत्तरस्यां दिशि यजेत् ।। माषामूल
श्रीमान् अपूयान्नभुक् । हेमन्ते समा
सारमेयैर्वृतः । देव्याः गोमयरूपयाश्रि
श्रेयसे लाभायुर्धन—धान्यदोऽस्तु सवत
कृष्णवर्णो महातेजा कृष्णस्रग्धाम भू
चरुश्चैव दीपोऽयं प्रतिगृहाताम् ।।

पाद्य देने के लिए जल पात्र में

और सर्वौषधि डालें—शन्नो देवी० मं
पानी कुबेर जी-भगवान् पर डालें और

राजराजेश्वर, महाराज, वैश्रवण, नरवाहन,
वः अर्घ्यं, आचमनीयं तथा मंत्रस्नानं नमः ।

फिर भगवान् को शुद्ध जल से स्नान

सोमो धेनुं सोमोऽर्वन्तमाशं सोमो वीरं
साधन्यं वितथ्यं सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशं
धिराजाय प्रसह्य साधने नमो वयं वैश्रवणा
गामान् कामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो व
वैभ्रवणाय, महाराजाय वै नमो नमः, स्नानं
नमः ॥

फिर भगवान् को उठा कर और ज

आसन पर विठा दें और आसन दे और पढ़ें

सिंहासनाय नमः, नरासनाय नमः ॥

अब तर्पण करें—कुबेराय, धनदाय,

संकल्पात् सिद्धिरस्तु धूपो नमः दीपो न

फूल लगाइए—कुबेराय, धनदाय व

हाथ जोड़िए :—अर्घ्यदानाद्यर्चनवि

पूर्णमस्तु ॥

हाथ पर जलधारा डालते पढ़ें—श

पढ़ते हुए कहें—कुबेराय, धनदाय—अपो

सनीयं नमः ।

फिर से हथेली पर जल धारा

देवी० मंत्र से ही—यक्षेश्वराय, धनदा

दक्षिणायै तिलहिरण्यरजतनिष्करणंद

भगवान् के सामने रखें) ।

अब नैवेद्य (खिचड़ी) लाइए—चुटु

का भोग सर्वत्र नैवेद्य से अलग २ थाल

हेमन्ते च समागतः प्रतिदिनं यः
देव्याः गोमयरूपयाश्रिततनुः यक्षेश्वरः
धान्यदोऽस्तु सततं श्रीराज़राजेश्वरः ॥

"यक्षराज ! महाभाग ! सर्वभूत द
समंदेव ! गृहाणमत्कृतंचरुम् ॥" यक्षाय,
कुवेराय पच्कान्नं समर्पयामि नमः ॥ रा
साधने नमो वयं वैश्रणाय कुर्महे । समे व
मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ॥
महाराजाय वै नमो नमः (नमस्कार करें)

चुटु के एक भाग पर पानी डालें :-